राष्ट्रीय रज़िया सुल्ताना ही इस देश के मुसलमानों का भविष्य है

यूसुफ किरमानी

इस बेटी का नाम है रज़िया सुल्ताना।

ये बिहार की पहली मुस्लिम महिला डीएसपी बनी हैं।

रजिया बिहार के हथुआ गोपालगंज के रहने वाले असलम साहब की बेटी है।

बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन (बीपीएससी) में अच्छी रैंक लाने वाली इस बेटी को आप मुबारकबाद दे सकते हैं।

बिहार के कई और मुस्लिम बच्चे भी बीपीएससी में टॉप रैंक लाएं हैं।

मैं बिहार का रहने वाला नहीं हूँ।

मैं यूपी का रहने वाला हूँ। दिल्ली एनसीआर में रहता हूँ।

ऐसी खबरों का साझा करने का मक़सद ये बताना है कि जिस अब्दुल पंक्चर वाले की तस्वीर अब तक पेश की जाती रही हैं, ये बेटियाँ उन्हीं की हैं।

देश की 35-40 करोड़ मुस्लिम आबादी में हालाँकि रजिया सुस्ताना जैसी बेटियों का अनुपात अभी बहुत कम है। लेकिन इंशाअल्लाह जब हमारा मुआशरा इस तरफ़ सोचने लगा है तो बदलाव ज़रूर आएगा।

राजनीति या किसी सरकार किसी सरकार के भरोसे हमारा मुआशरा नहीं बदलेगा। राजनीति जब बदलाव के लिए कारगर बनती थी, तब बनती थी। अब वो हमारे लिए अछूत हो जानी चाहिए।

मैं तो यह तक कह रहा हूँ कि अपनी बिरादरी के किसी भी नेता के वादे पर यक़ीन नहीं कीजिए। वह ख़ास मक़सद के लिए राजनीति में आए हैं। वो आपके लिए नहीं आए हैं। हाँ, राजनीतिक रूप से ज़रूर जागरूक रहें।

माशाल्लाह से इतनी समझ आप लोगों में आ चुकी है कि किसे वोट देना है और किसे नहीं देना है। अगर किसी राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ता बन भी गए हैं तो अपने लोगों के आर्थिक-सामाजिक मुद्दे को प्रमुखता से पार्टी प्लैटफ़ॉर्म पर उठाएँ। धार्मिक मुद्दे क़तई न उठाएँ, उससे आपकी कमजोरी सामने आएगी और वो पार्टी फ़ायदा उठाएगी। आप लोगों पर इमोशनल अत्याचार करेगी।

मौलवी साहब की जिम्मेदारी

मौलवी-मौलाना साहब लोगों पर जिम्मेदारी है कि वे अपने जुमे के खुतबे का डिसकोर्स बदलें। आप शिक्षा पर अपना डिसकोर्स फ़ोकस कीजिए। मैं आप लोगों से इस्लाम की बुनियादी बातें बताने से मना नहीं कर रहा हूँ। ज़रूर बताएँ, बल्कि बहुत ज़रूरी है बताना।

आप लोग वैक्सीनेशन की अच्छाइयाँ बताएं। सिर्फ़ शराब ही नहीं दूसरे नशों के बारे में मुस्लिम युवकों को आगाह करें। स्मैक, चरस, गाँजा जैसी नशीली ड्रग्स से मुस्लिम युवकों को बचाना बहुत ज़रूरी है।

मैं अक्सर सभी फरिक़ों के मौलवी-मौलानाओं के जुमा वाले खुतबों की रेकॉर्डिंग सुनता हूँ। काफ़ी निराशा होती है। इस मामले में शिया आलिमों को कुछ खुतबे बहुत ही शानदार होते हैं। मरहूम मौलाना कल्बे सादिक़ साहब का डिसकोर्स इतना शानदार होता है कि आज भी बार-बार सुनने को मन होता है। अली मियाँ नदवी के खुतबे भी मैंने सुने, वो बहुत प्रैक्टिकल बातें करते थे।

लिबास पर ज़रूर गौर करें

इसी तरह हम लोग अपने लिबास को लेकर बहुत ज़्यादा अड़ियल न हों। अभी जब हम लोग फिलिस्तीन में इस्राइल की बदमाशी और अत्याचार देख रहे थे तो आपने क्या ख़ास बात नोट की? इस्राइली बम धमाकों और गोलियों की बौछार के बीच वहाँ के युवक टी शर्ट जींस, पैंट शर्ट में नमाज़ पढ़ते नज़र आए। नमाज़ पढ़ाने वाले पेश इमाम के अलावा किसी की ड्रेस हमारे परम्परागत लिबासों की तरह नहीं थी।

हमें कुछ चीजों में बदलाव लाना होगा। हमें बाहर उसी तरह दिखना चाहिए, जैसा बाक़ी लोग दिखते हैं। मैं यह बात इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि किसी मलऊन ने हमें कपड़ों से पहचानने की बात कभी कही थी। हर्गिज नहीं। अपने घरों में हमें वही लिबास पहनना है, जिसे हमने दुनिया को पहनना सिखाया है।

लिबास का यहाँ संदर्भ बस इतना भर है कि आपका कोई भी लिबास स्कूल जैसा यूनिफ़ॉर्म न बन जाए। ऐसे यूनिफ़ॉर्म उन्हें मुबारक रहने दें जो सुबह सुबह किसी झंडे के नीचे अपना राष्ट्र प्रेम दर्शाते हैं और फिर दुकान पर जाकर मिलावटी घी, दाल, आटा, मसाले, दूध वग़ैरह बेचते हैं। जो किसानों का हक़ मारते हैं जो पैसा कमाने के लिए मुल्क से फ़रेब करते हैं।

नसीहतें कुछ ज़्यादा ही हो गईं। इसलिए अभी इतना ही।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक हैं)

जितिन प्रसाद के वंशवाद पर क्या कहेगी भाजपा

पलाश सुरजन

देशहित के नाम पर एक और कांग्रेसी नेता ने भाजपा का दामन थाम लिया। पूर्व राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल की मौजूदगी में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। इसके लिए बड़ा मासूम सा कारण जितिन प्रसाद ने बताया। उन्होंने कहा भाजपा ने कल्याणकारी योजनाएं लागू कीं। जिस दल में मैं था, महसूस हुआ कि जब अपनों के हितों के लिए कुछ कर नहीं पा रहा हूं। जब आप किसी की सहायता नहीं कर सकते। इस लायक नहीं हैं कि जनता के हितों की रक्षा नहीं कर सकते... कांग्रेस में मुझे यह महसूस होने लगा था, इसलिए भाजपा ज्वाइन की। कितनी आसानी से अपनी अकर्मण्यता और बेवफाई का ठीकरा जितिन प्रसाद ने कांग्रेस पर फोड़ दिया।

जितिन प्रसाद की गिनती अब तक राहुल गांधी के करीबी नेताओं में होती थी और इस नाते उन्हें वरिष्ठ कांग्रेसियों में गिना जाता था। हालांकि वे महज दो बार ही सांसद रहे हैं और जिस वंशवाद पर भाजपा चिंता जतलाती रहती है, जितिन प्रसाद उसी परंपरा के एक प्रतिनिधि हैं। उनके दादा ज्योति प्रसाद कांग्रेस सदस्य होने के साथ कई अहम पदों पर रहे। पिता जितेन्द्र प्रसाद कांग्रेस के बड़े नेता थे और उन्होंने सोनिया गांधी को साल 2000 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए चुनौती दी थी। हालांकि वे सोनिया गांधी के सामने बुरी तरह हार गए। जो लोग कांग्रेस को एक परिवार की पार्टी होने का आरोप लगाते हैं, उन्हें ये याद रखना चाहिए कि सोनिया गांधी को चुनौती देने के बावजूद जितेन्द्र प्रसाद ससम्मान कांग्रेस में बने रहे। क्या इसके बाद भी आंतरिक लोकतंत्र के प्रमाण की ज़रूरत है!

जितेन्द्र प्रसाद की मृत्यु के बाद जतिन प्रसाद ने उनकी राजनैतिक विरासत संभाली, 2004 और 2009 में सांसद निर्वाचित हुए और यूपीए सरकार के दो कार्यकालों में सत्ता का सुख भोगा। 2014 में फिर कांग्रेस की टिकट से चुनाव लड़े, लेकिन हार गए, इसके बाद 2019 में भी कांग्रेस प्रत्याशी बने और पार्टी को जीत नहीं दिला पाए। 2014 से भाजपा केंद्र की सत्ता पर काबिज हुई और उसके बाद कई विपक्षी दलों के नेताओं का भगवाकरण शुरु हुआ। अचानक बहुत से नेताओं को राष्ट्रसेवा का ख्याल आने लगा। आश्चर्य इस बात का है कि थोक में देशसेवी भाजपा नेताओं और केंद्र समेत आधे से अधिक राज्यों में भाजपा की सरकार के बावजूद न देश की हालत सुधरी, न जनता की।

उल्टे स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, मानवाधिकार, स्त्री सुरक्षा, किसान-मजदूरों के हक, पर्यावरण ऐसे तमाम क्षेत्रों में गिरावट ही दर्ज की गई है। जितिन प्रसाद से पहले ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी देश सेवा के नाम पर भाजपा की सदस्यता ग्रहण की थी। उन्हें तो राज्यसभा की सीट मिल गई, लेकिन उनके क्षेत्र की जनता के जीवन स्तर में कितना सुधार आया, ये कोरोना के दौरान पता चल गया। उनकी जनसेवा का आलम ये रहा कि उनकी गुमशुदगी के पोस्टर तक लग गए और भाजपा में वे आज भी अपने सम्मान की बाट जोह रहे हैं। केरल में भी टॉम वडक्कम ने ऐन चुनाव के पहले भाजपा का कमल थामा था, उन्हें उम्मीद रही होगी कि पार्टी टिकट देगी या कोई पद देगी, मगर आज भी उनके हाथ खाली हैं।

अब कांग्रेस को दगा जितिन प्रसाद से मिला है। कांग्रेस के 23 असंतुष्ट नेताओं में उनका नाम भी शामिल है। कांग्रेस के सांगठनिक ढांचे में सुधार के लिए लिखे पत्र में जिन नेताओं ने हस्ताक्षर किए थे, उनमें जितिन प्रसाद का नाम भी शामिल था।

इस वजह से प्रदेश कांग्रेस में उनके ख़िलाफ़ नाराज़गी भी देखी जा रही थी और कयास लग रहे थे कि जितिन प्रसाद भाजपा में शामिल हो सकते हैं। बहुत से लोग इसे कांग्रेस के लिए झटका बता रहे हैं, लेकिन एक तरह से कांग्रेस के लिए यह अच्छा ही है कि चुनाव से पहले नाराज, असंतुष्ट और बागी नेताओं की सफाई हो जाए। अन्यथा मणिपुर या गोवा की तरह चुनाव जीतने की कगार पर पहुंच कर दलबदल का जो नुकसान झेलना पड़ा, वो कहीं अधिक निराश करने वाला रहा।

वैसे भी उत्तरप्रदेश में कांग्रेस के पास खोने के लिए कुछ नहीं है और पाने के लिए ढेर सारी संभावनाएं हैं। रहा सवाल भाजपा का, तो उसके ऐसे फैसले बताते हैं कि पार्टी को सत्ता खोने का डर किस कदर सता रहा है। प. बंगाल में भी इसी तरह बड़े पैमाने पर टीएमसी और कांग्रेस के नेताओं को भाजपाई बनाया गया था, लेकिन भाजपा को फिर भी जीत हासिल नहीं हुई और अब कई नेता टीएमसी में शामिल होने के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं। जितिन प्रसाद को शामिल करने के पीछे सबसे बड़ा कारण ब्राह्मण वोट बैंक है।

जितिन प्रसाद ब्राह्मणों में अपनी पैठ बनाने की कोशिश लगातार कर रहे हैं। पिछले साल उन्होंने ब्राह्मण चेतना परिषद नाम से संगठन बनाया था और वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए जिले वार ब्राह्मण समाज के लोगों से संवाद किया और ब्राह्मण परिवारों से मुलाकात भी की थी। इधर योगी सरकार पर ब्राह्मणों की अनदेखी के आरोप लगते रहे हैं। उत्तरप्रदेश में 11-12 प्रतिशत आबादी ब्राह्मणों की है और सभी दल इस वोट बैंक को अपने पाले में करना चाहते हैं। एक वक़्त था जब ब्राह्मण मतदाताओं का भारी समर्थन कांग्रेस को था, लेकिन अब सोशल इंजीनियरिंग के कायदे बदल गए हैं। भाजपा योगी के चेहरे के साथ ब्राह्मणों को अपने साथ नहीं कर पाएगी, इसलिए जितिन प्रसाद को अपने साथ लाना भाजपा के लिए फायदेमंद हो सकता है, सवाल ये है कि क्या जितिन प्रसाद की राजनीति इससे परवान चढेगी या वे इस्तेमाल के बाद दरकिनार कर दिए जाएंगे।

अपने विधायकों से ऐसे पेश आता है योगी

राजेन्द्र चतुर्वेदी

सबसे पहले तो उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य उमेश द्विवेदी का धन्यवाद कि उन्होंने खुशी दुबे का मुद्दा उठाया।

द्विवेदी भाजपा में हैं और भाजपा में रहते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ बोलना बहुत हिम्मत का काम है। द्विवेदी ने यह पराक्रम कर दिखाया, इसके लिए उन्हें धन्यवाद।

अगर आप विद्वान मित्रों ने ऊपर की पंक्तियां ठीक से न पढ़ी हों तो कृपा करके फिर से पढ़ लीजिए।

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ने के बाद आपके दिमाग में ये सवाल जरूर उठा होगा कि खुशी दुबे का मुद्दा उठाना, योगी आदित्यनाथ के खिलाफ बोलना कैसे हुआ।

इस सवाल का जवाब मैं दूं, इससे पहले यह जान लीजिए कि खुशी दुबे का मुद्दा क्या है। हालांकि, हमारे ज्यादातर मित्र पहले से ही जानते हैं कि खुशी दुबे का मुद्दा क्या है।

कानपुर के पास बिकरू नाम का गांव है। यह बात हमने भी सुनी है, आपने भी सुनी ही होगी कि बिकरू वाले विकास दुबे को सीएम योगी की बिरादरी के एक माफिया के रास्ते से हटाने के लिए विकास दुबे के खिलाफ एक जबरदस्त षड्यंत्र किया गया था। एक ब्राह्मण को ही मोहरा बनाकर विकास दुबे के खिलाफ बहुत हल्की फुल्की धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया गया। फिर विकास की गिरफ्तारी के लिए रात को पुलिस भेजी गई। पुलिस की टीम का नेतृत्व भी एक ब्राह्मण को ही सौंपा गया।

बिकरू में इस टीम पर फायरिंग हुई, जिसमें आठ पुलिसकर्मी मारे गए, जिनमें तीन ब्राह्मण थे। दावा तो यह किया गया कि फायरिंग विकास दुबे ने की, लेकिन ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि चूंकि विकास को मारना था, इसलिए फायरिंग षड्यंत्र करने वालों ने ही कराई होगी। जो लोग ऐसा मानते हैं, उन्हें गलत भी नहीं कहा जा सकता।

इस फायरिंग में पुलिसकर्मियों की मौत के बाद विकास दुबे ही नहीं, ब्राह्मणों के दमन का सिलसिला भी प्रारंभ हो गया।

सबसे पहले तीन ब्राह्मण पुलिस अफसरों को नौकरी से निकाला गया, फिर जेल भेज दिया गया, यह आरोप लगाकर कि इन लोगों ने विकास दुबे को संरक्षण दिया।

फिर विकास दुबे की खड़ी फसल को उजड़वा दिया गया, उनका मकान गिरा दिया गया, तीन कारें और दो ट्रैक्टर तोड़ दिए गए। इस मामले में कुल 14 ब्राह्मणों का कत्ल किया गया, जिनमें विकास दुबे के 84 वर्षीय मामा शामिल रहे। बिकरू गांव का एक 15 साल का लड़का भी शामिल रहा। ये लड़का हाईस्कूल की परीक्षा में 97 प्रतिशत नम्बर लेकर आया था। एनकाउंटर में एक ऐसे ब्राह्मण का भी कत्ल कर दिया गया, जिसके दोनों पैर नहीं थे। जिन लोगों का कत्ल किया गया, उनमें एक अमर दुबे भी थे। कत्ल होने से तीन दिन पहले अमर दुबे की शादी हुई थी। कत्ल होने के एक दिन पहले उनकी बारात लौटकर उनके घर पहुंची थी। अमर दुबे का कत्ल कर दिया गया, उनकी नाबालिग धर्मपत्नी खुशी दुबे को जेल में डाल दिया गया। खुशी दुबे के अलावा इस मामले में तीन महिलाएं और जेल में बंद हैं।

...अब सुनिए सच्ची घटना

भाजपा के तीन ब्राह्मण विधायक योगी से मिले। उनमें से मुझे एक विधायक ने जो बताया। वो जानते हैं कि मैं सरकार विरोधी पत्रकार हूं। उसी विधायक के शब्दों में सुनिए - मैंने योगी जी को बताया कि खुशी दुबे अभी छोटी बच्ची ही है। फिर अपराधियों के परिवार वालों को जेल में नहीं डाला जाता। आप उसे रिहा करा दीजिए। योगी ने मेरी बात ध्यान से सुनी तो मुझे अच्छा लगा कि वे खुशी को रिहा करा देंगे। योगी ने मेरे ही सामने एक बड़े पुलिस अधिकारी को फोन लगाया, उससे पूछा कि खुशी दुबे पर किन किन धाराओं में कार्रवाई की गई है। अफसर बताता रहा, योगी सुनते रहे। हां हूं करते रहे। फिर बोले अभी उस पर रासुका और लगाओ और फोन रख दिया और उठकर चले गए। और हम तीनों कुछ नहीं कर पाए। मतलब, खुशी दुबे का दमन योगी की प्राथमिकता है। इसके बाद भी अगर कोई विधायक खुशी दुबे को न्याय देने की मांग करने की हिम्मत भी जुटा लेता है तो वह निश्चित ही बधाई का पात्र है। इसलिए उन भाजपा विधायकों को बधाई मिलनी ही चाहिए जो योगी के सामने खड़े होने की हिम्मत जुटा रहे हैं।